Unit-2 कविः जयशंकर प्रसाद

- जन्मः 1889 , मृत्युः ई. स. 1937
- प्रसाद का जन्म काशी के सुप्रतिष्ठित वैश्य कुल में हुआ था ।
- उनका मूल 'सुंघनी साहू' के नाम से प्रसिद्ध था ।
- उनके पिता देवी प्रसाद साहू काव्य-प्रेमी थे ।
- वे हिन्दी के प्रथम छायावादी तथा रहस्यवादी कवि माने जाते हैं ।
- उनकी भाषा संस्कृत-प्रधान तत्सम हिन्दी है ।
- काव्य- रनाएः

1. कामायनी (महाकाव्य) 2. आँसू 3. लहर 4. झरना 5. प्रेम-पथिक 6. कानन-कुसुम 7. चित्राधार 8. करुणालय

2. जाग री
बीती विभावरी जाग री
अम्बर पनघट में डुबो रही
तार-घट ऊसा नागरी ।

खग-कुल कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई-
मधु मुकुल नवल रस गागरी ।

अधरों में राग अमन्द पिये,
अलको में मलयज बन्द किये-
तू अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग री ।

Unit-2 कविः जयशंकर प्रसाद

1. हिमान्द्रि तुंग श्रृंग से
2. जाग री
3. पेशोला की प्रतिध्वनि
4. सौन्दर्य

1. हिमान्द्रि तुंग श्रृंग से

हिमान्द्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध सुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्जवला
स्वसन्त्रता पुकारती-
अमत्य वीरपुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है, बढ़े चलो,
विकीर्ण दिव्य दाह-सी-।।
सपूत मातृभूमि के-
रुको न शूर साहसी ।
अराति सैन्य सिन्धु में- सुवाड़वाग्नि-से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो-बढ़े चलो, बढ़े चलो ।

2. जाग री

बीती विभावरी जाग री
अम्बर पनघट में डुबो रही-
तारा-घट ऊषा नागरी ।

खग-कुल कुल कुल सा बोल रहा,
किसलय का अँचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई-
मधु मुकुल नवल रस गागरी ।

अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये-
तू अब तक सोई है आली
आखों में भरी विहाग री ।

3. पेशोला की प्रतिध्वनि

अरुण करुण बिम्ब ।
वह निर्धूम भस्म रहित ज्वलन पिण्ड ।
विकल विवर्तनों से
विरल प्रवर्तनों में
श्रमित नमित-सा-

पश्चिम के व्योम में है आज निरवलम्ब-सा ।
आहुतियाँ विश्व की अजस्त्र ले लुटाता रहा-
सतत, सहस्र कर माला से-
तेज ओज बल जो वदान्यता कदम्ब-सा ।
पेशोला की उर्मियाँ हैं शान्त, घनी छाया में-
तट तरु हैं चित्रित तरल चित्रसारी में ।
झोंपड़े खड़े हैं बने शिल्प ये विषाद के-

दग्ध अवसाद से ।
धूसर जलद खण्ड भट पड़े हैं
जैसे विजन अनन्त में ।
कालिमा बिखरती है सन्ध्या के कलंक सी,

दुन्दुभि-मृदंग-तूर्य शान्त स्तब्ध, मौन है ।
फिर भी पुकार सी है गूँज रही व्योम में-

कौन लेगा भार यह ?
कौन विचलेगा नहीं ?
दुर्बलता इस अस्थि-मांस की-
ठोंककर लोहे से, परखकर वज्र से
प्रलयोल्का खण्ड के निकष पर कस कर,
चूर्ण अस्थि पुंज-सा हँसेगा अट्टहास कौन ?
साधना पिशाचों की बिखर चूर-चूर होके
धूलि-सी उड़ेगी किस दृप्त फूत्कार से ।
कौन लेगा भार यह ?
जीवित है कौन ? साँस चलती है किसकी
कहती है कौन ऊँची छाती कर, मैं हूँ-
-मैं हूँ-मेवाड़ में,

अरावली श्रृंग-सा समुन्नत सिर किसका ?
बोली, कोई बोलो-अरे, क्या तुम सब मृत हो ?

आह । इस खेवा की ।

कौन थामता है पतवार ऐसे अंधड़ में
अन्धकार पारावार गहन नियति-सा-
उमड़ रहा है, ज्योति-रेखा-हीन, क्षुब्ध हो ।

खींच ले चला है-
काल-धवर अनन्त में,
साँस, सफरी-सी अटकी है, किसी आशा में ।
आज भी पेशोला के-
तरल जल मण्डलों में,
वही शब्द घूमता-सा-
गूँजता विकल है ।
किन्तु वह ध्वनि कहाँ ?
गौरव-सी काया पड़ी माया है प्रताप की
वही मेवाड़ ।
किन्तु आज प्रतिध्वनि कहाँ ?

4. सौन्दर्य

तुम कनक किरण के अन्तराल में
लुक-छिप कर चलते हो क्यों ?

नत मस्तक गर्व वहन करते
यौवन के धन, रस-कन ढरते ।
हे लाज भरे सौन्दर्य , बता दो
मौन बने रहते हो क्यों ?

अधरों के मधुर कगारों में
कल-कल ध्वनि की गुंजारों में,
मधुसरिता-सी यह हँसी तरल
अपनी पीते रहते हो क्यों ?

बेला विभ्रम की बीत चली
रजनीगंधा की कली खिली-

अब सान्ध्य- मलय – आकुलित
दुकूल कलित हो, यों छिपते हो क्यों ?

Unit- 2 / 2 सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘ निराला ’

परिचयः

- जन्मः ई. स. 1897 , मृत्युः ई. स. 1962
- निराला का जन्म बंगाल के जिला मेदिनीपुर के महिषादल राज्य में हुआ था ।
- उनके पूर्वज उत्तर प्रदेश में उन्नाव जिले के गढ़कोला स्थान के निवासी थे ।
- संस्कृत, बँगला , अंग्रेजी, हिन्दी आदि का अच्छा अध्ययन किया था ।
- रामकृष्ण मिशन के ‘समन्वय’ पत्र का संपादन-कार्य किया ।
- निराला ने कुछ समय तक ‘मतवाला’ नामक साप्ताहिक पत्र भी चलाया ।
- जीवन में अनेक घात-प्रतिघातों का सामना और विधुर-जीवन के कारण उनका व्यक्तित्व अधिक अखंड बन गया था ।
- वे बहुमुखी प्रतिभा वाले साहित्यकार थे ।
- उनकी कविता में दार्शनिक चिन्तन की गहरी छाप है तो साथ ही मानव-हृदय की सूक्ष्म अनुभूतियों की गहरी छाप है ।
- निराला हिन्दी में मुक्त-छंद के प्रवर्तक माने गए हैं ।
- हिन्दी में छायावादी और प्रगतिवादी कवियों में उनका स्थान रहा है ।
- निराला की भाषा संस्कृत-गर्भित भाषा है ।
- उनकी भाषा-शैली पर बँगला का प्रभाव होने से उसमें गति और मधुरता का सुन्दर समन्वय हो पाया है ।

❖ उनकी प्रमुख रचनाएः 1. अनामिका 2. परिमल 3. गीतिका 4. तुलसीदास 5. अणिमा 6. अपरा 7. कुकुरमुत्ता

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

जन्मः 9, सितम्बर 1850 , मृत्युः 6 जनवरी, 1885

- भारतेन्दु नाम की उपाधी से सन्मानित ।
- बहुमुखी प्रतिभा के धनी ।
- 1868 सन् में कवि वचन सुधा तथा 1873 में हरिश्चन्द्र मैगज़ीन पत्रिका का संपादन ।
- 1873 में बालबोधीनी (नारी विषयक) पत्रिका का संपादन ।
- रचनाएः नाटक- वैदिकी हिंसा हिंसा नभवति, विषस्य विषमौषधम, चंन्द्रावली, भारत दुर्दशा, प्रेमयोगिनी, निलदेवी, अन्धेर नगरी ।
  अनूदित नाटक- विद्यासुन्दर, पाखंड विडंबन, धनंजय विजय, मुद्राराक्षस, कर्पूर मंजरी, सत्य हरिश्चन्द्र, भारत जननी ।
- लेवी-प्राण लेवी भारतेन्दुजी की एक व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी है ।
- भारतेन्दु के साहित्य में राजभक्ति है किन्तु शनैः शनैः उनकी राष्ट्रभक्ति राजभक्ति को दबाकर उनकी रचनाओं में पूरे वेग से मुखरित हुई है ।

मुकरियाँ - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

सब गुरुजन को बुरो बतावै ।
अपनी खिचड़ी अलग पकावै ।
भीतर तत्व न झूठो तेजी ।
क्यों सखि सज्जन, नहिं अंग्रेजी । (1)

तीन बुलाए तेरह आवै ।
निज निज बिपता रोइ सुनावै ।
आंखौ फूटे भरा न पेट ।
क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रेजुएट । (2)

रूप दिखावत सबरस लूटै ।
फंदे मैं जो पड़ै न छूटै ।
कपट कटारी जिय मैं हुलिस ।
क्यों सखि सज्जन नहिं सखि पूलिस । (3)

भीतर भीतर सब रस चूसै ।
हंसि हंसि कै तन मन धन मूसै ।
जाहिर बातन में अति तेज ।
क्यों सखि सज्जन, नहिं अंग्रेज । (4)

नई नई नित तान सुनावै ।
अपने जाल में जगत फँसावै ।
नित नित हमैं करै बल सून ।
क्यों सखि सज्जन, नहिं कानून । (5)

दोहे - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
पै निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल । (1)

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि सब गुन होत प्रवीन ।
पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन । (2)

इक भाषा इक जीव इक मति सब घर के लोग ।
तबै बनत है सबन सों मिटत मूढ़ता सोग । (3)

बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहुं भाषा मांहि प्रचार । (4)

फूट बैर को दूरि करि बांधि कमर मजबूत ।
भारत माता के बनो, भ्राता पूत सपूत । (5)